P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

टोडारायसिंह की बावड़ियों का एक ऐतिहासिक अध्ययन

बाबू लाल
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान

सारांश

राजस्थान की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परम्परा में टोडारायसिंह की बावड़ियों का विशिष्ट स्थान है। यहाँ की बावड़ियाँ अपनी स्थापत्य कला, इतिहास और सांस्कृतिक गौरव के लिए भारत वर्ष में प्रसिद्ध है। टोडारायसिंह कस्बा घट्टी (आटा पीसने की चक्की) पट्टी, डावडी (सूर बालाओं) तथा बावड़ी के लिए प्रसिद्ध है। टोडारायसिंह को बावड़ियों का नगर कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगा। यहाँ के निवासियों ने जल संरक्षण का महत्व 1500 वर्षों पूर्व ही समझ लिया था इसलिए उन्होंने जल संरक्षण के लिए अनेक बावड़ियों का निर्माण करवाया जिनकी संख्या उस समय लगभग 750 रही होगी जिनमें से लगभग 365 बावड़ियों से नगर में प्रतिदिन पेयजल की आपूर्ति के लिए बनाई गई थी। जिनमें से अधिकांश बावड़ियाँ का निर्माण 16वीं व 17वीं शताब्दी के अंतराल में किया गया था।

टोडारायसिंह में बावड़ियों का निर्माण प्राचीन समय में पानी की समस्या एवं विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए किया गया था। लगभग 2500 वर्ष पूर्व स्थापित इस नगर में बावड़ियों के भग्नावेष आज भी अपनी भव्यता एवं कलात्मक सौन्दर्य अभिव्यक्त करते हैं।

विशाल पत्थरों को तराश कर बनाई अनगिनत बावड़ियाँ विशिष्ट स्थापत्य शैली से अपनी अलग अलग पहचान लिये हुए हैं। विरासत कालीन यह बावड़ियाँ अपनी स्थापत्य संबंधी विशेषताओं विशाल तोरणद्वार, अनगिनत सीढ़ियाँ, स्तम्भयुक्त बरामदे, मेहराबदार झरोखे, सूर्य के प्रतीक चक्र, गणेश, गजरोही, अश्वरोही उत्कीर्ण आकृतियाँ हर किसी को बरबस अपनी ओर आकृर्षित करती है।

मुख्य शब्द : टोडारायसिंह की बावड़ियाँ, भारतीय जल संस्कृति।

प्रस्तावना

टोडारायसिंह की बावड़ियाँ भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की अनुपम विरासत है, इनका निर्माण जयपृच्छा, अपराजितपृच्छा, विश्वाकर्मावास्तुशास्त्र, राजवल्लभवास्तुशास्त्रम्, समरांगण सूत्राधार आदि ग्रंथों में दिये गये स्थापत्य शास्त्र के सूत्रधारों के दिशा–निर्देशों के अनुसार किया गया था। बावड़ियों के निर्माण में शिल्पशास्त्रीय नियमों के साथ–साथ स्थानीय कला का भी समावेश दिखाई देता है। जल परम्परा की साक्ष्य इन बावड़ियों ने जल के साथ समाज के अन्तरंग संबंधों व उनके विभिन्न पहलुओं को अपने में समाहित किया हुआ है।

टोडारायसिंह की ऐतिहासिक विरासत यहाँ की बावड़ियाँ वर्तमान में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है। यह कलात्मक बावड़ियाँ वर्तमान में अपने जीर्ण–शीर्ण स्वरूप में भी अपने अतीत की गौरवशाली परम्परा से वर्तमान पीढ़ी को परिचय करवा रही है अगर समय रहते इनके संरक्षण के प्रयास नहीं किये गये तो भावी पीढ़ी अपनी गौरवशाली एवं समृद्धशाली ऐतिहासिक परम्परा के ज्ञान से वंचित रह जायेगी। जो कि किसी भी राष्ट्र या संस्कृति के लिए शुभ संकेत नहीं है।

इसलिए सरकार को टोडारायसिंह की ऐतिहासिक बावड़ियों के संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे। इनका जीर्णोद्वार कर इनके अस्तित्व की सुरक्षा के लिए इनका नवीनीकरण एवं सौन्दर्यकरण करना होगा। स्थानीय जनता में ऐतिहासिक विरासतों के संरक्षण के प्रति चेतना उत्पन्न होगी। टोडारायसिंह की बावड़ियों का ऐतिहासिक इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास होगा।

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य टोडारायसिंह की ऐतिहासिक धरोहर बावड़ियों का जीर्णोद्वार कर इनको वर्षा जल संग्रहण कर स्थानीय पेयजल आपूर्ति में स्थानीय आत्मनिर्भरता प्राप्त करना तथा टोडारायसिंह को राजस्थान के ऐतिहासिक पर्यटन मानचित्र पर समुचित स्थान दिलाना है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

टोडारायसिंह एक प्राचीन ऐतिहासिक कस्बा है। शिलालेखों और साहित्यिक ग्रंथों में इसका नाम तक्षकगढ़, तक्षकपुर, टोड़ापत्तन, इष्टिापुर आदि मिलते हैं। इस कस्बे का वैभवशाली एवं गौरवपूर्ण इतिहास भारत एवं राजस्थान में बिखरा पड़ा है। इतिहास का कुछ काल–क्रम अंधकार में दवा होने के कारण इतिहासकार इस समयावधि के विषय में मौन है। परन्तु इस काल–अवधि को छोड़कर इतिहासकारों ने टोडारायसिंह के इतिहासपर अपनी लेखनी चलाकर इसके ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व को उजागर किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नांकित उद्देश्य है–

1. टोडारायसिंह की बावड़ियों के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व को उजागर करना।
2. जल संरक्षण एवं प्रबंधन की दृष्टि से टोडारायसिंह की बावड़ियों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का विस्तृत एवं गहन अध्ययन करना।
3. टोडारायसिंह की बावड़ियों के प्रति प्रशासन एवं स्थानीय लोगों में चेतना उत्पन्न करना।
4. राजस्थान के पर्यटन मानचित्र पर टोडारायसिंह की ऐतिहासिक विरासत को समुचित स्थान दिलाना।

साहित्यावलोकन

इस शीर्षक पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। बावड़ियों के बारे में साहित्यिक ग्रन्थों, पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए आलेखों से, बावड़ियाँ का प्रत्यक्ष अवलोकन कर तथा स्थानीय व्यक्तियों से प्राप्त जानकारी के आधार पर में अपना शोध कार्य पूर्ण करूंगा।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में 'सर्वेक्षण विधि' का चयन किया गया है। जिसमें टोडारायसिंह की बावड़ियाँ का प्रत्यक्ष अवलोकन कर उनकी वस्तु स्थिति का परिचय, इतिहास, स्थापत्य, जल प्रबंध की तकनीक, उनकी उपयोगिता का व्यक्तिगत अध्ययन कर एवं स्थानीय व्यक्तियों के मौखिक साक्षात्कारों के आधार पर बावड़ियाँ का ऐतिहासिक अध्ययन किया जायेगा।

टोडारायसिंह कस्बा अनेक राजवंशों की राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ विभिन्न कलाकृत्तियों का निर्माण हुआ। यहाँ का सबसे महत्वपूर्ण शासक रायसिंह था जिनके द्वारा करवाये गये निर्माण कार्यों के कारण इस कस्बे का नाम टोडारायसिंह हो गया।

टोडारायसिंह की सर्वाधिक प्रसिद्ध बावड़ी हाड़ी रानी कुण्ड है जिसका निर्माण राव रूपाल ने बून्दी के मीणाओं पर विजय प्राप्त कर हाड़ा राजकुमारी से विवाह के उपलक्ष्य में करवाया था। यह बावड़ी त्रिमुखी (जया) बावड़ी का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें तीन ओर से जल स्तर तक जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई है तथा प्रत्येक दिशा की सीढ़ियाँ बाहर खण्डों में विभक्त है। प्रत्येक खण्ड में 11–11 सीढ़ियाँ और दस सीढ़ियों के समाप्त होने पर एक लम्बी सीढ़ी है, इस प्रकार तीनों और कुल 396 सीढ़ियाँ हैं तथा इस बावड़ी की जलकुण्ड की पश्चिमी दिशा में दो मंजिला विशाल स्तम्भ युक्त बरामदे हैं जिनमें ऊपर से नीचे उतरकर जल तक पहुँचने के लिए सीढ़िया बनी हुई है। बरामदे के छज्जे को स्तम्भों के ऊपर रखे गये उतरंगों तथा उनके ऊपर रखी गई पट्टियों के बीच इस तरह फंसाया गया है कि बाहर की ओर निकले हुए यह बिना किसी सपोट के है। बरामदों के नीचे जलकुण्ड की ओर मुँह किए भगवान श्री गणेश की प्रतिमा स्थापित है।

हाड़ी रानी की बावड़ी, टोडारायसिंह (टोंक)

इस बावड़ी के निर्माण का खर्च रानी हाड़ी की कांचली के अर्द्ध भाग में जड़ित हीरे–पन्नों की लागत से लगाया जाता है। हाड़ी रानी की कँचूकी में जड़ित हीरे–मोती इतने मूल्यवान है कि उनकी कीमत से इस भव्य बावड़ी का निर्माण किया गया था। यह बावड़ी अपनी स्थापत्य कला एवं सौन्दर्यशीलता के लिए आज भी प्रसिद्ध है। विशाल पत्थरों के समायोजन से बनी इस बावड़ी को देखकर यह लगता है कि प्राचीन स्थापत्य कला अपने शिखर पर थी। जिसने जल स्थापत्य की इस अनुपम धरोहर को साकार रूप दिया।

भारतीय जल संस्कृति की शिरोमणी 'बावड़ी' अथवा 'वापी' एक समृद्ध जल परम्परा की प्रतीक है, जिसका प्रारंभ सिंधु घाटी सभ्यता से माना जाता है। सिंधु घाटी सभ्यता के मुख्य स्थल मोहन जोदड़ों के उत्खनन से प्राप्त वहत स्नानागार को बावड़ियों निर्माण का प्रारंभिक रूप माना जाता है। भूगर्भीय जल के सुलभ उपयोग तथा जल के संचयन एवं पुनःभरण की समझ की परिचायक बावड़ियों संपूर्ण भारत विशेषकर पश्चिमी एवं मध्य भारत में अपने स्थापत्य के लिए आज भी विद्यमान है।

बावड़ियाँ जल स्थापत्य का एक विशिष्ट स्वरूप है, जिसमें एक गहरा जलकुंड होता है, इसमें पानी खींचकर निकालने के साथ के साथ ही सतह तक जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी होती है, इनको सीढ़ीदार कुँआ (Step-Well) कहा जाता है, ऐसी बावड़ियों का सर्वाधिक प्रचलन राजस्थान एवं गुजरात में है। इनके जल कुण्ड में जल भण्डारण वर्षा जल के एकत्रित होने या भूमि के नीचे स्वतः जल ही औजस्त्र धाराओं से होता है। प्रायः बावड़ियों का स्थापत्य पाषाणमय होता है और प्रत्येक सीढ़ी के पाषाण से लेकर कुण्ड तक प्रस्तर (पाषाण) का प्रयोग होता है। प्रत्येक पाषाण प्रायः चौकार या वर्गाकार अथवा

आयतकार होता है। सीढ़ी युक्त इन कुँओं को संस्कृत भाषा में 'वापी' कहा जाता है।

राजस्थान में जल संरक्षण एवं प्रबंधन की परम्परा अति प्राचीनकाल से प्रचलित रही है। यहाँ कूप, सरोवर एवं बावड़ी निर्माण के कार्य शासकों का सामाजिक एवं धार्मिक दायित्व माना जाता था। बावड़ियाँ मात्र पेयजल का स्रोत ही नहीं थी, अपितु कृषि, विश्राम स्थल तथा भूमिगत जल मंदिर होने के साथ–साथ यह वर्षा जल के पुनर्भरण का भी मुख्य स्रोत भी अपनी महलनुमा आकृति के कारण सभी स्तरों का जल मुख्य कूप में ही समाहित होता था। व्यापारिक मार्गों पर स्थित होने के कारण अधिकांश बावड़ियाँ जल स्रोत के साथ–साथ विश्राम स्थल का कार्य भी करती थी।

टोडारायसिंह की बावड़ियों का राजस्थान ही नहीं वरन भारत वर्ष में अपनी स्थापत्य कला, इतिहास, जल संरक्षण और सांस्कृतिक गौरव के लिए प्रसिद्ध है। अरावली पर्वत श्रृंखला की तक्षक गिरी पहाड़ियों की तलहटी में स्थित टोडारायसिंह कस्बा अपनी ऐतिहासिक विरासत बावड़ियाँ निर्माण की गौरवमय सांस्कृतिक परम्परा के लिए जाना जाता है।

रहट (महल) बावड़ी, टोडारायसिंह

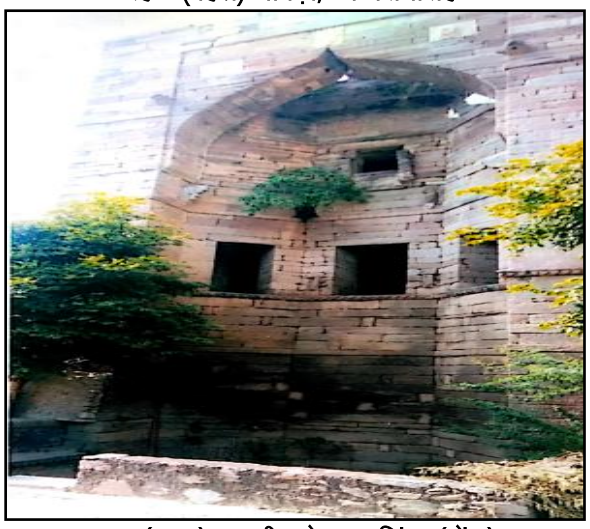

रहट (महल) बावड़ी, टोडारायसिंह, (टोंक)

राजस्थान में बावड़ियाँ निर्माण की परम्परा का आगमन ईसा की प्रथम शताब्दी के लगभग पश्चिमी राजस्थान में शक जाति के साथ हुआ। इतिहासकार वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार रहट और बावड़ी दो प्रकार के कुएं शकों द्वारा भारत में लाये गये। राजस्थान में भीनमाल (जालौर) क्षेत्र में शकों का शासन था, इसलिए इस क्षेत्र में अनेक बावड़ियों का निर्माण किया गया था।

जो कुआँ पत्थर तथा ईंटों से बंधा हुआ तो तथा जिसमें जलस्तर तक जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हो तो उसे 'वापी' कहा जाता है। संस्कृत भाषा के शब्द 'वापी' से ही हिन्दी में बाव या बावड़ी बना है, इसे बावली, झालरा, बाव आदि नामों से भी जाना जाता है। मराठी में इसे 'बाख', कन्नड़ भाषा में 'कल्याणी' व पुष्करणी तथा अंग्रेजी में 'स्टेपवेल' (Stepwell) भी कहा जाता है।

टोडारायसिंह में विद्यमान जलदायिनी बावड़ियाँ अपने आप में इतिहास के विभिन्न तथ्यों को समेटे हुए हैं। इन पर उत्कीर्ण शिलालेख महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेजों के रूप में उभरकर सामने आते हैं। इनके अध्ययन से इनके निर्माण के उद्देश्य राजनैतिक स्थिति, शासन व्यवस्था, वंश–क्रम, युद्ध अभियान, विवाह, दान, भाषा आदि की जानकारी मिलती है।

यहाँ की बावड़ियाँ की स्थापत्य सौंदर्य से प्रभावित होकर फिल्म निर्देशक अमोल पालेकर ने अभिनेता शाहरूख खान और अभिनेत्री रानी मुखर्जी अभिनीत 'पहेली' फिल्म के दृश्यों का फिल्माकंन 5 मार्च 2005 को टोडारायसिंह की प्रसिद्ध हाड़ीरानी बावड़ी पर किया।

प्राचीन समय में टोडारायसिंह कस्बे में 365 से अधिक बावड़ियाँ विद्यमान थी। वर्तमान में 15–20 बावड़ियों को छोड़कर अधिकांश प्रशासनिक उपेक्षा, संरक्षण, जनचेतना के अभाव एवं समय की मार के कारण काल की ग्रास बन गई है जो बावड़ियाँ है वह भी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है।

टोडारायसिंह की बावड़ियाँ में हाड़ीरानी का कुंड, भोपत बावड़ी, सारड़ा बावड़ी, रहट (महल) बावड़ी, श्याम मंदिर की बावड़ी, आम सागर की बावड़ी, भूढ़ा बावड़ी, जगन्नाथ बावड़ी, चोर बावड़ी, किंगसी बावड़ी, कोटतली बावड़ी, अम्मासागर बावड़ी, मण्डौर भैंरू बावड़ी, मीठी बावड़ी, खारी बावड़ी, भाण्ड बावड़ी एवं लाडपुरा बावड़ी को छोड़कर सभी बावड़ी ध्वस्त हो गई है।

ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण टोडारायसिंह की बावड़ियाँ की वर्तमान में महत्वपूर्ण प्रासंगिकता है अगर इनका जीर्णोद्वार कर समुचित संरक्षण किया जाये तो यह बावड़ियाँ ऐतिहासिक स्रोत के रूप में, जलसंरक्षण एवं जलापूर्ति, पर्यटन, ऐतिहासिक विरासत का संरक्षण एवं जलचेतना का विकास की दृष्टि से उपयोगी हो सकती है।

निष्कर्ष

टोडारायसिंह की बावड़ियाँ हमारी विरासत की अनुपम निधि है। जल परम्परा की साक्ष्य इन बावड़ियाँ ने जल के साथ समाज के अन्तरंग संबंधों व उनके विभिन्न पहलुओं को अपने में समाहित किया हुआ है। इन पर अंकित शिलालेख, महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेजों के रूप में उभरकर सामने आये हैं, इनके अध्ययन से इनके

निर्माण के उद्देश्य तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति की जानकारी मिलती है।

ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण टोडारायसिंह की बावड़ियों की वर्तमान में महत्वपूर्ण प्रासंगिकता है। इनके अध्ययन के द्वारा टोडारायसिंह कस्बे के ऐतिहासिक महत्व को उजागर किया जायेगा। यह बावड़ियाँ वर्तमान में जल प्रबंधन एवं पर्यटन की दृष्टि से काफी उपयोगी हो सकती है। राजनीतिक उपेक्षा एवं प्रशासनिक उदासीनता के कारण टोडारायसिंह की बावड़ियाँ अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है। अगर समय रहते इनके संरक्षण की ओर ध्यान नहीं दिया गया तो यह बावड़ियाँ हमारी आगामी पीढ़ी के लिए अतीत बनकर रह जायेंगी।

इस शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य बावड़ियों का संरक्षण के द्वारा सौन्दर्यीकरण व नवीनीकरण होने से जहाँ इनमें वर्षा का जल संरक्षित रहेगा, वहीं सौन्दर्यीकरण से पर्यटक भी आकर्षित होंगे तथा टोडारायसिंह राजस्थान के पर्यटन मानचित्र पर उभर सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *अग्रवाल, अनिल एवं नारायण सुनिता, बून्दों की संस्कृति, सेन्टर फॉर साइस एंड एनवायरमेंट, नई दिल्ली, 1998, पृ.स.46–47*
2. *पुरोहित प्रकाश, आज भी प्रासंगिक है परम्परागत जल स्रोत, राजस्थानी ग्रंभागार, जोधपुर, 1996, पृ.स. 44*
3. *भल्ला, एल.आर. सामयिक राजस्थान, कुलदीप प्रकाशन, जयपुर, 2006, पृ.स.253*
4. *राणावत, ईश्वर सिंह, राजस्थान के जल संसाधन, चिराग प्रकाशन, उदयपुर, 1999, पृ.स.11*
5. *सिंह, वाई.डी., राजस्थान के कुएँ एवं बावड़ियाँ, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाशन, मेहरानगढ़ फोर्ट, जोधपुर, 2002, पृ.स.96–97*
6. *सिंह, वाई.डी., राजस्थान की झीलें व तालाब, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाशन, मेहरानगढ़ फोर्ट, जोधपुर, 2002, पृ.स.45*
7. *सिंह, वाई.डी., राजस्थान में पारम्परिक नहरें, राजस्थानी ग्रंभागार, जोधपुर, पृ.स.10–11*
8. *सौलंकी, कुसुम, भारतीय बावड़ियाँ, सुभद्रा पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2013, पृ.स.21*
9. *सुजस, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर, 2008, पृ.स.33*
10. *राजस्थान पत्रिका, टोंक जिले की बावड़ियों पर विशेष : ऐतिहासिक विरासत का कोई नहीं धणी–धोरी लेख, दिनांक 22.09.2015, पृ.स.12*